Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.45269, JULY-AUG 2017, VOL- 4/35

शक्षा की गुणवत्ता और सेवा कालीन प्रशक्षण

सुरेन्द्र कुमार तिवारी[1], . . संगीता रणदिवे[2]
[1]प्राचार्य स्व. गुलाबबाई यादव स्मृति शक्षा महावद्यालयएबोरवां (दे.अ.व.व.)
[2]शोधार्थी, देवी अहिल्या वश्व वद्यालय इंदौर

Abstract

प्रस्तुत आलेख शक्षा की गुणवत्ता व सेवाकालीन प्रशक्षण की आवश्यकता पर आधारित वचार वचार है। यदि शक्षा की गुणवत्ता, आज की आवश्यकता हैए तों सेवाकालीन प्रशक्षण इसमें क्या योगदान दे सकती है। शक्षण व्यवसाय में हो रहे नीतिगत परिवर्तन में सेवाकालीन प्रशक्षण की भूमका पर वचार प्रस्तुत कया गया है । इसमें जीवन कौशल की आवश्यकता पर पर थोड़ा प्रकाश डालने का प्रयास कया गया है। शक्षण व्यवसाय की दृष्टि से शक्षा की गुणवत्ता से क्या अभप्राय हो सकता है इस पर वचार प्रस्तुत कए है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

व्यवसायिक नीतियाँ समय के साथ बदलती हैए शक्षण व्यवसाय एक उन्नति शील व्यवसाय है। शक्षण व्यवसाय में नित नए परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तन के साथ गुणवत्ता पूर्ण शक्षण दी जा सकता हैएसाथ ही उत्तम वातावरण देने का प्रयास भी जा सकता है। समाज व राष्ट्र की नीतियों में वश्व पटल के अनुसार परिवर्तन होते हैं। इन नीतियों का पालन एक अच्छा नागरिक ही कर सकता है। एक अच्छे नागरिक के गुण एक वद्यार्थी में कस प्रकार आएंगेए यह तों शक्षक से अच्छा कोई भी नहीं बता सकता है। वद्यार्थयों की आवश्यकताओं व वचारों में परिवर्तन आ रहे हैंए यह वचार कस तरह एक समाज व राष्ट्र के लए सुखदायी हो सकते हैंए व नीतियाँ कस प्रकार हमारी संस्कृति व आधुनिकता को बना कर रख सकती हैए या दोनों में सामंजस्यता बिठा सकती है। इसकी आवश्यकता बनी हुई है। देखा जाय तोंए वद्यार्थी की मांग समयानुसार परिवर्तित हो रही हैए

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आसपास के वातावरण में इतना ज्ञान प्राप्ति का वशाल भंडार हैए क वह कई वषय संबंधी बाते स्वयं ही जान लेते है।

अतः शक्षण व्यवसाय मे नीतियों का निर्माण वद्यार्थयों की आवश्यकताओंए उनका समाज में स्थान व उन्नति के लए आवश्यक बिन्दुओं को ध्यान में रख कर कया जाता है। हम शक्षण में केवल यही ध्यान नहीं रखतेए क हमे केवल उस वद्यार्थी का वकास करना हैए अपतु समाज में वह वद्यार्थी कतना योगदान दे सकता हैए उसका भी ध्यान रखना है। हर व्यवसाय का एक ही मंत्र होता हैए मांग और पूर्ति तों इसके अनुसार शक्षण व्यवसाय में नीतियाँ कस प्रकार होगी।

शक्षण व्यवसाय मे मांग हैए एक अच्छे व गुणवत्ता पूर्ण उत्पाद की अब इसकी पूर्ति कस प्रकार की जायगीए तों शक्षण व्यवसाय की नीतियाँ कस प्रकार की होगी। चूंक शक्षण व्यवसाय ही एक ऐसा व्यवसाय हैए जो सभी व्यवसाय की आधारशला है। यही वह

व्यवसाय हैएजो भावी भवष्य की नींव रखता हैएयदि नींव में मजबूती न हो तों कसी भी व्यवसाय क उन्नति संभव नहीं है। अतरू शक्षण व्यवसाय के लए आवश्यक हैए शक्षा की गुणवत्ता । शक्षा की गुणवत्ता निहित हैए शक्षण की गुणवत्ता पर।

अब यदि हम शक्षा की गुणवत्ता क बात करते हैए तों गुणवत्ता कस में निहित है। गुणवत्ता दिखाई देती हैए वद्यार्थी के व्यक्तित्व मेंए समायोजन मेंए हर परिस्थिति का सामना करने मेंए एक स्वस्थ व उत्तम मस्तिष्क के निर्माण मेंए तथा एक प्रगतिशील मस्तिष्क के निर्माण आदि मेंए शक्षा की गुणवत्ता होनी चाहिए। गुणवत्ता के बारे में अलग अलग मत हो सकते है। गुणवत्ता पूर्ण शक्षा तभी संभव हैंएजब उसमे नैतिक मूल्य हो। आज जीवन कौशल पर बल दिया जा रहा हैं। जीवन कौशल क्या पहले नहीं थेः जीवन कौशल से अर्थ क्या लगा सकते हैंः जीवन कौशल के अंतर्गत नैतिक मूल्य का समावेश होता हैएतों क्या

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पहले नैतिक मूल्य नहीं थेः जिसके कारण अब उसे एक नए नाम के साथ प्रस्तुत कया जा रहा है। जीवन कौशल के अंतर्गत ईमानदारीए सहयोगए सहिष्णुताएसहानुभूति का समावेश करते हैंएऔर साधारण अर्थ लगाए तों जीवन-जीने की कलाए अब जीवन तों परिस्थितियों से समझौता करके भी जीया जाता हैए तों क्या यही जीवन कौशल हैः हमे जीवन कौशल क आवश्यकता महसूस क्यों हो रही हैः जबक यह मूल्य तों हमारी संस्कृति में ही वद्यमान थेए इनकी आवश्यकता एक नये नाम से क्या हो रही है ः

अब एक छोटा साए उदाहरण कहने के लए छोटा सा हैए लेकन यह जीवन कौशल के आवश्यकता का समझाने का कार्य तों कर सकता है। 21 जनवरी 2017 इंदौर (म.प्र.) के एक दैनिक समाचार पत्र में एक समाचार थाए शहर में जो नवजात फेंके जाते हैंए उनमें 90% लड़कयाँ होती है। कहने के लए यह समाचार इंगत करता हैएक नवजात को फेकने में भी लंगभेद है। लेकन एक यह प्रश्न भी तों हैएनवजात जिनकी शायद ही गलती होगी वो फेंके जा रहे हैंएसाहस क कमी कसमें हैए अपनी गलती स्वीकारने में या गलतियों को छुपाने में ।

अब यदि समाचार पत्रों के समाचार देखे या वद्यार्थयों की थोड़ी शक्षा के प्रति रुच का हम गहराई से अध्ययन करे तोंए वद्यार्थी वर्ग कही न कही असंतुष्ट दिखाई । अब सबकी संतुष्टि के अनुसार शक्षण संभव नहींए लेकन नैतिक मूल्यों के साथ शक्षण संभव हैए देखा जाए तों शक्षा तों गुणवत्तापूर्ण ही थीए क्योंक यदि हम शक्षा से संबधत आयोगो को देखे तोंए शायद ही कोई ऐसा आयोग होगाए जिसने शक्षा की गुणवत्ता की बात न की हो। नीतियों का निर्माण भी हुआ और उसी आधार पर शक्षा भी दी जा रही है। क्या उसके क्रयान्वयन मे कोई समस्या है ः अब हम यह नहीं कह सकतेए क शक्षा की गुणवत्ता गुणवत्ता यदि पुस्तकीय ज्ञान से समझे तों शायद कमी नहीं हैए इसका एक उदाहरण हैए दसवी की हिन्दी की कताब के एक पाठ से समझने का प्रयास करते हैं । पाठ का एक भाग

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भाग हैए गन्नी का सोना यह रवीन्द्र केलेकर द्वारा रचत हैएव्यवहारिक आदर्शवाद पर आधारित पाठ पूरी तरह से आपको भ्रमत कर देगा आखर हम कहना क्या चाहते हैं ःवद्यार्थयों के सामने प्रस्तुत क्या करना चाहते हैः कहने के लए यह एक उदाहरण हैंए लेकन लेकन समझने का प्रयास करेंए पाठ के सारांश अनुसार शुद्ध सोने मे जब तक तांबे की मलावट न करे तब तक आभूषण नहीं बनेगे। यह तों हुई व्यवहारिक बात लेकन कहानी में यह भी कहा हैए क व्यवहारिक आदर्शवाद केवल लाभ और हानि पर आधारित हैएऔर ऐसे समाज का पतन जल्दी होता हैं।एक तरफ समाज को देखे तों व्यवहारिक आदर्शवाद को महत्व कही न कही दिख जाता हैएतों यह पाठ क्या शक्षा दे रहा हैः कहने के लए इस पाठ का सारांश को पढने के बाद शक्षा की गुणवत्ता पर सवाल उठाया जा ही नहीं सकताए लेकन क्या यही वास्तवकता हैः वास्तवकता शायद थोड़ी हट कर हैंएहम सही अनुपात नहीं रख पा रहे हैंए या जो आदर्शवाद हैएउसे व्यवहारिक रूप से सही रूप में प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं ।

यदि इस उदाहरण को ले तोंए हम यह नहीं कह सकतेए की शक्षा के गुणवत्ता में कही कोई कमी हैए तों समस्या क्या हैः यदि शक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्न उठाए जा रहे हैंए तों शायद शक्षा के माध्यमए शक्षक या वो तकनीकी जिसके द्वारा शक्षा वद्यार्थयों के पास पहुँच रही है।उसमे कही कोई कमी तों नहीं ।यदि हम शक्षक व शक्षक के पास जो साधन हैएपाठ्य पुस्तक। पाठ्य पुस्तक की बात करे तोंए पाठ्यक्रम मे परिवर्तन समयानुसार हो रहा हैए कस वर्ग के लए कौनसा पाठ्यक्रम सही हैए यह देखा जाता है। उस आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण होता हैए अब वह कस रूप में वद्यार्थयों के पास पहुँच रहा हैए यह जानना आवश्यक है।

अब चूंक परिवर्तन हो रहे हैं एइसके लए शक्षा के हर स्तर पर प्रयास हो रहे हैंए अब छब्त्ज द्वारा चलाया जा रहा पाठ्यक्रम पूरे प्रदेश मे चलाया जाएगाएयह एक प्रयास हैए क्योंक इसमें यह हो गया जो हम समानता की बात करते हैंएउस पर सवाल

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उठना बंद हो जाएंगे। अब इसकी आवश्यकता क्यो पढ़ रही हैएयह तों शक्षावदों द्वारा ही बताया जायगाए हो सकता हैए क छब्म्त्ज के दृष्टिकोण में पुस्तक जो क शक्षक के लए साधन साधन हैएशायद स्तर के अनुसार नहीं है/ या राष्ट्रीय स्तर पर एकसमान पाठ्यक्रम होना चाहिए। अतरू सुधार की आवश्यकता हैंएअब हम यह मान सकते हैंए क इसके पीछे जो भी दृष्टिकोण होगा वह अवश्य ही नीतियों से संबन्धित होगा। भावी नागरिकों का निर्माण आवश्यक हैंए अपघात कम होए योगदान में वृद्ध हो।

यह तों हुआ पुस्तकों के लए प्रयासएअब शक्षण दक्षता के लए कया जाने वाला प्रयास समय–समय पर सेवाकालीन शक्षक प्रशक्षण। अब सेवाकालीन क्यों वेसे तों नियम हैएकी प्रशक्षत शक्षको को ही शक्षण व्यवसाय में रखा जाएएक्योंक प्रशक्षत शक्षक वे हैंए जो शक्षण वधयोंए बाल मनोवज्ञान तथा शक्षा की सही स्थिति से परिचत हैं। यदि गुणवत्ता पर सवाल उठता हैए तों वचार उठना लाज़मी हैए क कमी कहाँ हैघ् हो सकता नियमों का पालन नहीं हो रहा हैंए या नियमों में कही कोई ढील हो सकती हैं। लेकन परिवर्तन शाश्वत हैंएपरिवर्तन को कोई रोक नहीं सकता ।लेकन परिवर्तन वधयों में होता हैए मूल्यो में नहीं।प्रकृति कभी बदलती नहीं जैसी हैएवह वैसी ही रहेगी। शक्षा की प्रकृति उसके मूल्यों पर आधारित होती है।क्या मूल्यों में परिवर्तन हो सकता हैंघ् मूल्य राष्ट्र की संस्कृति से जुड़े होते हैएवह राष्ट्र के वकास के लए आवश्यक होते हैं। राष्ट्र का वकास वहाँ के नागरिकों के वकास पर निर्भर करता हैए नागरिक आर्थकए सामाजिकएऔर नैतिक रूप से सुदृढ हो। कन्तु उनके मूल्य अंधवश्वास से जुड़े होएतों क्या शक्षा सचमुच शक्षा हैघ् नहींए शक्षा यह समझाने का प्रयास करती हैएक क्या सही हैघ् शक्षा अंधवश्वास को दूर करके वश्वास को जगाने का प्रयास करती है।इस प्रकार शक्षा एक मात्र साधन हैए उन्नति का।

अब शक्षा को देने के साधन में भी परिवर्तन आवश्यक हैए कोई भी मनुष्य सम्पूर्ण नहीं होता है।यदि हम एक बार के प्रशक्षण में यह मान लेंए क वह दक्ष हो

हो गया तों महामानव या अतिमानव क कल्पना साकार हो गई। अब तों सृष्टि में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं रही। लेकन यह संभव नहीं हैए वह अपूर्ण है इसलए तों मानव हैए उसे भी नवीन प्रशक्षण की आवश्यकता हैए इसलए तों समय-समय पर प्रशक्षण दिया जाता हैए या या सेवाकालीन प्रशक्षण पर ज़ोर डाला जाता है।

सेवाकालीन प्रशक्षण की आवश्यकता क्यों हैः इस पर थोड़ी दृष्टि हमनें ड़ाल लीएपर सेवा कालीन प्रशक्षण में शक्षक क्या अपेक्षा रखता हैएऔर प्रशक्षण के पश्चात उनसे क्या आपेक्षत परिणाम की यथार्थ मे कल्पना की जाती हैः प्रशक्षत शक्षक में शक्षण अभरुचए कक्षा में शक्षण दक्षताएआदि के गुण तों वद्यमान होते हैंएलेकन सेवाकालीन प्रशक्षण के बाद इन गुणों में कतनी वृद्ध हुई हैए ये उनकी शक्षण व्यवसाय के प्रति निष्ठाए वद्यार्थयों की उपलब्धिए तथा कक्षा में नई तकनीकी के साथ सफलता पूर्वक शक्षण पर आधारित होती है।

अब हम उपरोक्त जिन तीनों गुणों की बात कर रहे हैं। इनमें सर्वप्रथम हम यह मान सकते हैंएक शक्षक की व्यवसाय के प्रति निष्ठा जो आधारित होती हैएउसकी अभक्षमता परए उसके दृष्टिकोण आदि पर।प्रशक्षत शक्षक में हम यह तों मान सकते हैंएक शक्षण व्यवसाय के प्रति जो उसका दृष्टिकोण होगाए वह सकारात्मक ही होगाए यदि इस व्यवसाय में ही हम नकारात्मक वचार के साथ प्रवेश करते हैंएतों अन्य व्यवसाय क प्रगति के बारे मे हमें सोचना भी नहीं चाहिएएऔर प्रशक्षण के पश्चात भी नकारात्मक दृष्टिकोण रहे तों उन्नति की बात सोचना भी नहीं चाहिए। सकारात्मक दृष्टिकोण अर्थात गलत परिस्थितियाँ बदली जा सकती हैंएकठिन परिस्थितियों से भी निकला जा सकता हैं। शक्षा नुकसान नहीं कर सकती हैंएपरिवर्तन संभव हैं। यह तों हुआ शक्षा के प्रति दृष्टिकोणए अब हम शक्षण अभक्षमता को समझने का थोड़ा प्रयास करते हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शक्षण अभक्षमता के लए यह वचार हैएक यह जन्मजात गुण है। लेकन सभी स्थान पर प्रतिशत एक समान होता हैंएशायद नहींः अभक्षमता यदि व्यक्ति के मौलक गुण मानें तों व्यक्ति भवष्य में वह इस व्यवसाय में कतना सफल हो सकता हैए या ऐसे क्या मुख्य गुण हैंए जो व्यक्ति को इस व्यवसाय में सफलता का (जो वद्यार्थयों की उन्नति पर आधारित हैं) का ध्योतक हैंः अभक्षमता को हम इस प्रकार समझ सकते हैं-

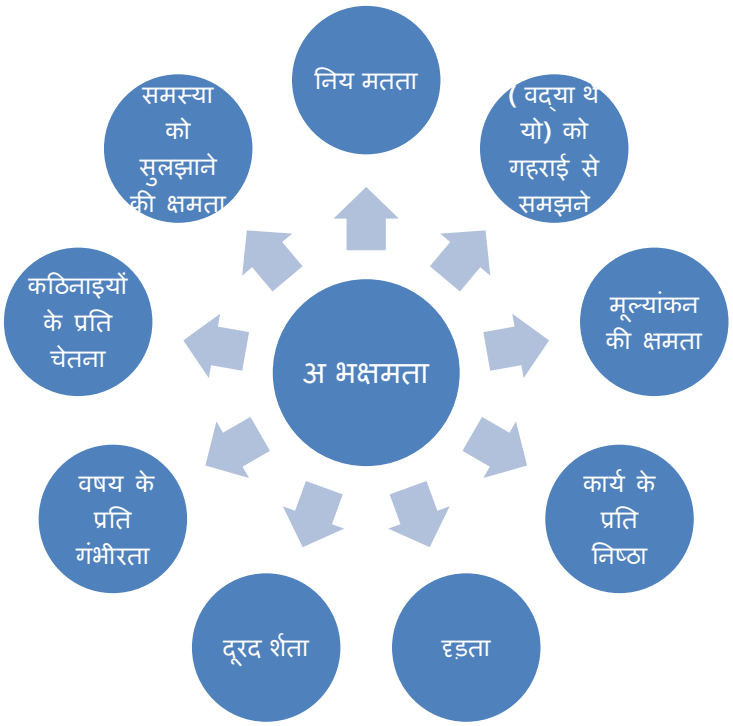

क्या अभक्षमता प्रभावत होती हैंध्क्या अभक्षमता होते हुए ही कोई इस व्यवसाय मे असफल हो सकता हैं। यदि प्रशक्षत शक्षको के परिणाम संतोंषप्रद नहीं हैंए या अधक सुधार की आवश्यकता हैंए या हम शक्षा के निम्न स्तर की बातें करे तों शक्षा के गुणवत्ता की बात बेमानी है। अभी वश्व में अपना स्थान को न देखे तों बेहतर हैं।

हम शक्षा की गुणवत्ताका मापन कस प्रकार कर रहे हैंः शक्षा की गुणवत्ता में शक्षक का योगदानए मुख्य उसकी जन्मजात अभक्षमता। लेकन क्या अभक्षमता प्रभावत प्रभावत होती हैंध्शायद नहीं या हो सकता हैएअभक्षमता व्यक्ति की सोच पर भी निर्भर करती हैंए क वह इस व्यवसाय को कस प्रकार ग्रहण कर रहा हैं। यदि व्यवसाय इस दृष्टिकोण से

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की कही कुछ नहीं मला तों अंत यही थाए या सबसे सुरक्षत व्यवसाय यही हैए एक तों हुए ये ये दृष्टिकोण या एक दूसरा दृष्टिकोणए क में तों केवल इसी व्यवसाय के लए ही बना हूँ / बनी हूँए ये भावना व्यक्ति में जब भी आ जाय तब शायद व्यवसाय के प्रति निष्ठा बढ़ जाती हैं।तब कह सकते प्रशक्षण सफल था । अतः यदि प्रशक्षण व्यवसाय के प्रति निष्ठा बढ़ता हैए यह प्रशक्षण की सफलता है। प्रशक्षण के बात भी कसी अन्य व्यवसाय का चयनए प्रशक्षण पर प्रश्न खड़ा कर सकता हैंए।हम कह सकते हैंएक निष्ठावान व्यक्ति ही शक्षा की प्रगति के बारे में सोच सकता हैएया ये कहे शक्षा की गुणवत्ता का ख्याल रख सकता है।

सेवाकालीन प्रशक्षण इसमें क्या सहायता कर सकती हैंः शक्षक अभक्षमता से यह ज्ञात हुआएक व्यक्ति में शक्षक बनने के जन्मजात गुण थेएप्रशक्षण के बाद निखार आया थाए तों सेवाकालीन प्रशक्षण के बाद और उत्कृष्टता आएंगी या आनी चाहिए। यही उत्कृष्टता शक्षा के लए मील के पत्थर का कार्य करेंगी। सेवाकालीन प्रशक्षण के पश्चात शक्षक मे निम्न व्यवसायिक गुणों में उत्कृष्टता आनी चाहिए। नई तकनीकी का सफलता पूर्वक प्रयोगएनई वधयो का सफलता पूर्वक प्रयोगए नैतिक गुणों को पालन करने का अधक सामार्थ्यएव्यवसाय के प्रति निष्ठा पालन करने में दृड़ताए कक्षा शक्षण में उत्कृष्टता आदि।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सेवाकालीन प्र शक्षण के पश्चातए शक्षक के व्यवहार में होनें वाला परिवर्तन

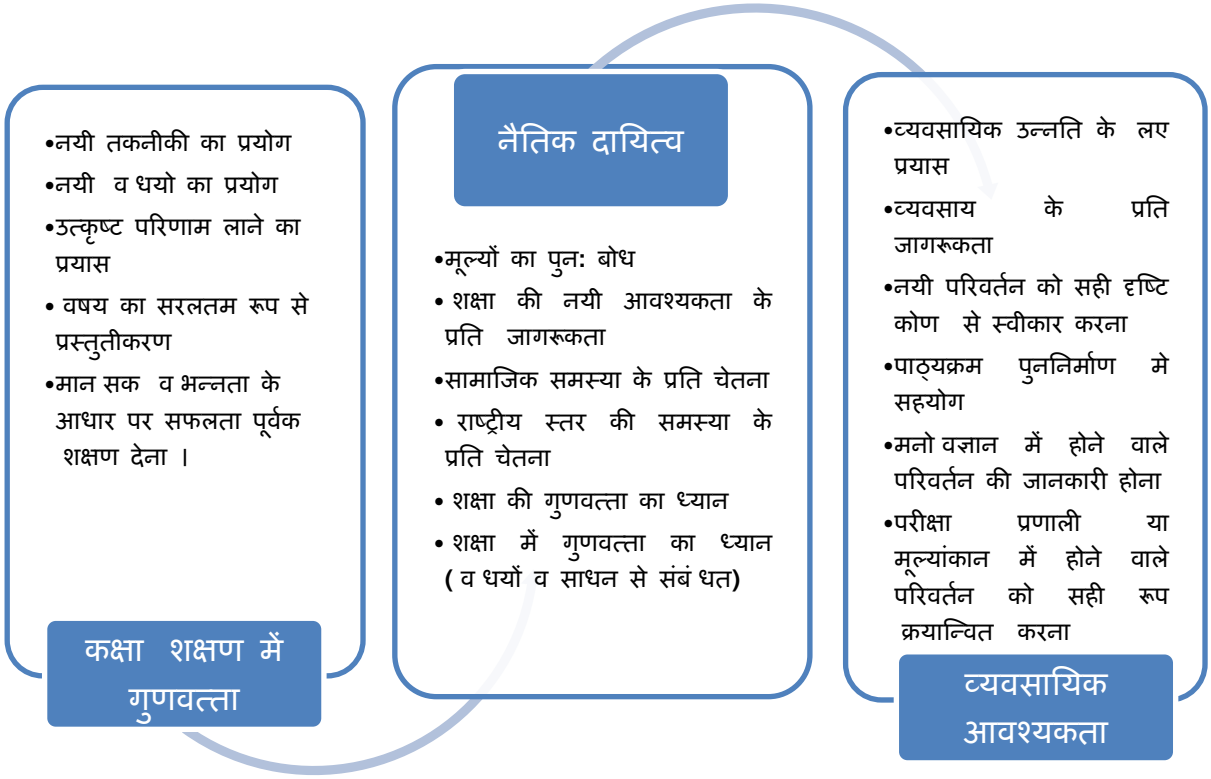

दूसरे गुणों क हम यदि बात करते हैंएतों वह हैं कक्षा में शक्षण दक्षता क अर्थात एक प्रशक्षत शक्षक अपने प्रशक्षण के समय जो सीख कर आया हैं। वह कतनी दक्षता से उसका उपयोग कक्षा शक्षण में कर सकता हैं। एक प्रशक्षत शक्षक कक्षा में अपने वषयगत उद्देश्य व सामान्य उद्देश्य के साथ शक्षण प्रारंभ करता हैंए उसके मस्तिष्क में यह सोच तों होनी चाहिएए क इस प्रकरण के द्वारा कौन से सामान्य उद्देश्य के निकटतम पहुँचा जा सकता हैं।

वे कौन से वषयगत उद्देश्य हैंए जो मूल्यांकन के समय हम प्राप्त होंगेएइसके लए कौन सी वध उपयुक्त होगीघ कौन सी दृश्य व श्रव्य सामग्री अधक उपयुक्त होंगी घपाठ का प्रस्तुतीकरण में कस वध द्वारा वद्यार्थयों की त्रुटियों को कम से कम कया जा सकता हैं। यदि कशोरावस्था की बात करे तों कशोरावस्था के मनोवज्ञान सेएसाथ ही बाल बाल मनोवज्ञान से भी भली प्रकार से परिचत होना चाहिए। अब चूंक हम यह प्रशक्षत

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शक्षक की बात कर रहे हैंए तों हम यह मान सकते हैंए क सेवाकालीन प्रशक्षण के पश्चात एक शक्षक में निम्न परिवर्तन हो सकते हैंए

1. वह जो दैनिक जीवन से संबधत उदाहरण अपनी कक्षा में देता थेए उसे आज क वास्तवकता के साथ सार्थकता से जोड़ सके।
2. समाज में रहे बदलाव को प्रकरण के साथ जोड़कर दैनिक जीवन के उदाहरणों द्वारा वद्यार्थयों तक पहुंचा पाये।
3. भवष्य में होने वाली समस्याएँ एवं आवश्यकता को दैनिक जीवन के उदाहरणों के साथ सम्मिलत कर सके।
4. आधुनिक वधयों का प्रयोग कक्षा में अनुशासन के साथ पूरे आत्मवश्वास के साथ प्रयोग कर सके।
5. वद्यार्थयों के मनोवज्ञान व उन पर हो रहे बाहरी वातावरण के प्रभाव को कारण जों परिवर्तन हो रहे हैंए उसे देखते हुए कक्षा के स्तर को एक समान स्थिति तक लाने का प्रयास शक्षक के द्वारा हो सकता है।
6. समपर्ण उसका बढ़ जाएगाए वह शक्षा में हो रहे परिवर्तन जो भवष्य के लए आवश्यक हैंए उसे अपनाएगा।
7. वह स्वयं भी नई तकनीकी द्वारा स्वाध्याय में लग जाएगा।

तीसरी जो प्रमुख बात हैए वह वद्यार्थयों की उपलब्धि जब हम वद्यार्थयों की उपलब्धि के बात करते हैंए तों हम कह सकते है क जितना उसका मानसक स्तर थाए उसने उतनी उपलब्धि हासल की। लेकन यदि हम शक्षण दक्षता के संदर्भ में लेएतों एक प्रशक्षत शक्षक के लए वद्यार्थयों की उपलब्धि के मायने क्या हैंः अतः हम यह कह सकते हैंए क शक्षक केवल उनके लए नहीं होते जिनका मानसक स्तर ऊँचा होए व जो कसी भी वस्तु को

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

को आसानी से समझ कर प्रगति कर लेंए तों इसमें शक्षण दक्षता का प्रतिशत कतनाए कहने का अर्थ हैंए

उच्च शक्षण दक्षता +उच्च मानसक स्तर=उच्च उपलब्धिएलेकन

उच्च शक्षण दक्षता निम्न मानसक स्तर=सामान्य उपलब्धि

शक्षण तभी गुणवत्ता पूर्ण समझा जाएगा। अतः हम एक कक्षा में यदि शक्षण दक्षता का मूल्यांकन करना हैए तों यह तभी संभव हैए जब उच्च मानसक स्तर वाले वद्यार्थी सही समय पर उपलब्धि तथा निम्न मानसक स्तर वाले वद्यार्थी सामान्य उपलब्धि प्राप्त करे।यदि माध्यमक स्तर पर शक्षा की दक्षता का आकलन करना हैंएतों हम उस वर्ग की सामान्य हिन्दीए सामान्य अँग्रेजीएसामान्य वज्ञानएसामान्य गणतएका अध्ययन करना पड़ेगा। अतः शक्षक में यह दक्षता होनी चाहिएएक कक्षा का निम्न शैक्षक उपलब्धि वाला वद्यार्थी कम से कम हिन्दीए अँग्रेजी में वाचनएतथा लेखन तों कर सके। जो वषय हैए उस कक्षा के अनुरूप वह प्रस्तुत तों कर सके। उच्च उपलब्धि तों उच्च मानसकता का परिचायक होती हैं। सामान्य उपलब्धि निम्न मानसक स्तर के लए शक्षण दक्षता की उत्कृष्टता का परिचायक होगी।

सेवाकालीन प्रशक्षण में इन बातों को ध्यान में रखते हुए प्रशक्षण की व्यवस्था होनी चाहिएए ताक एक शक्षत समाज आए। जिनमें आत्म निर्भरता होंए दूसरे पर आश्रत रहने के स्थान पर स्वयं कार्य करेए समाज के लए बोझ न बनकर एक उपयोगी उत्पाद बनें।

संदर्भ :

पाल एच. आर. ;2006द्धण *प्रगत शक्षा मनो वज्ञान* ए दिल्ली रू हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली वश्ववद्यालय बैरक नं 2 एवं4 ए

पाल एच.आर.(2010). शैक्षक-शोध. भोपाल:मध्य प्रदेश अकादमी भोपाल ।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies